International Journal of Social Sciences Arts and Humanities 12 (2) **(2025) 133-135**

Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijssah/

International Journal of Social Sciences Arts and Humanities
(ISSN: 2321-4147) (Scientific Journal Impact Factor: 6.002)
A Peer Reviewed UGC Approved Quarterly Journal

Research Paper

गांधार कला शैली एक दृष्टि में

डॉ० शालिनी[1] और विकास जोशी[2]*

[1]सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, चौधरी रणवीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद, हरियाणा.
[2]सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखंड.

ARTICLE DETAILS

अनुरूपी लेखक:
विकास जोशी

प्रमुख शब्दावली
गांधार कला, पुष्कलावत, गुहक यक्ष, रोमन कला, टोंगा, बोधिसत्व

ABSTRACT

भारत में कला का इतिहास अति प्राचीन रहा है। ब्राह्मण धर्म के पुनरुत्थान के फलस्वरूप जब बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर हुआ तो महायान सम्प्रदाय के भिक्षुओं द्वारा बौद्ध धर्म को बचाने के लिये बुद्ध को मूर्तिरूप प्रदान किया जाने लगा। इससे पहले बुद्ध की पूजा प्रतीकों के रूप में होती थी, जिसके प्रमाण के रूप में हम सांची और भरहुत के स्तूप को देख सकते हैं। बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद कालाशोक के शासनकाल में दूसरी बौद्ध संगति का आयोजन किया गया, जिसमें बौद्ध सम्प्रदाय दो भागों 'महासंघिक' और 'स्थिवर' में विभाजित हो गया। आगे चलकर स्थिवर, हीनयान और महासंघिक, महायान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महायान सम्प्रदाय को बुद्ध की प्रतिमा का निर्माण कर उनकी पूजा अर्चना की शुरुआत करवाने का श्रेय दिया जाता है। सर्वप्रथम बुद्ध मूर्तियों का निर्माण प्रथम शताब्दी में कुषाणवंशीय शासकों कनिष्क तथा हुविष्क के द्वारा करवाया गया। इन मूर्तियों का निर्माण मथुरा कला शैली और गांधार कला शैली में किया गया। मथुरा कला शैली पूर्णतः भारतीय और गांधार कला शैली यूनानी और रोमन कला शैली से प्रभावित है। यूनानी कला के प्रभाव में आकर देश के पश्चिमोत्तर प्रान्तों में जिस शैली का उद्भव हुआ उसे हम गांधार कला शैली के नाम से पहचानते हैं। गांधार कला शैली यूनानी होते हुये भी अपने आत्मीय स्वरुप में भारतीय है, अतएव इसे इण्डो-ग्रीक, ग्रीको-रोमन, ग्रीक बुद्धिस्ट शैली भी कहा जाता है। तक्षशिला, कपीशा, पुष्कलावती, बामियान, नगरहार, स्वात घाटी, बल्ख प्रदेश आदि गांधार कला के प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। इस कला शैली में बनी मूर्तियों में स्वातघाटी के भूरे रंग या स्लेटी रंग के पत्थरों का प्रयोग हुआ है।

1.प्रस्तावना:

गांधार कला का विस्तार पूर्व में तक्षशिला से लेकर पश्चिम में जलालाबाद क्षेत्र तक रहा है। उत्तर-पश्चिमी भारत का ही प्राचीन नाम गान्धार था, जिसका उल्लेख वैदिक और संस्कृत साहित्य में अनेक स्थानों पर हुआ है। इस विशाल जनपद को सिन्धु नदी दो भागों में विभक्त करती थी- पूर्वी गान्धार और पश्चिमी गान्धार। पूर्वी गान्धार की राजधानी तक्षशिला और पश्चिमी गान्धार की राजधानी पुष्कलावती थी। कुषाण सम्राटों के शासनकाल में इसी गान्धार प्रदेश में प्रचलित कला को गांधार कला के नाम से प्रसिद्धि मिली। भौगोलिक दृष्टिकोण से गान्धार प्रदेश ऐसा क्षेत्र था जो कि भारतीय, यूनानी तथा रोमन संस्कृतियों का संगम स्थल था। इस स्थान की कला परम्परा में पूर्व और पश्चिम दोनों के कला तत्त्व विद्यमान थे। इस प्रकार गांधार प्रदेश में ग्रीक कलाकारों के द्वारा इस मूर्तिकला को अपनाया गया था। कुषाण शासकों ने इस कला को संरक्षण दिया, और आगे चलकर इस मूर्तिकला ने गान्धार कला के नाम से ख्याति अर्जित की। रौलेण्ड के अनुसार, पेशावर घाटी में सबसे पहले बुद्ध की मूर्ति का निर्माण रोमन कलाकारों द्वारा हुआ था। गांधार शैली की मूर्तियों के अधिकांश विषय भारतीय धर्म और परम्परा से संबधित होने के कारण स्मिथ महोदय ने इस शैली को ग्रीक बुद्धिष्ट नाम दिया है।

2. गांधार कला शैली के विषय:-

गांधार कला के विषयों में ईरानी हिंगलाज की देवी नानी और उनाहिता की मृण्मूर्तियाँ शामिल हैं, जिनके सिर पर सितारों युक्त मुकुट विराजमान है, इसके अतिरिक्त इस कला के विषयों में कपि, सिंह और मानव मस्तक वाले काल्पनिक पशु भी शामिल हैं। रोमन और यूनानी

---

*Author can be contacted at: सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखंड

Received*: 30-04-2025*; Sent for Review on: *-02-05- 2024*; Draft sent to Author for corrections*: 04-05-2025*; Accepted on*: 18-05-2025*; Online Available from *20-05-2025*
DOI: 10.13140/RG.2.2.26345.81764

IJSSAH: *-9923/© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.*

रूपांकनों में आयोनियन और डोरिक शैली के स्तंभों पर माला से सजे वामन आकृतियां, कामपुत्र के यक्ष, गुहक यक्ष, जल देवता, समृद्धि की देवी दिमित्रा, हरीति, किन्नर, समुद्र की देवी एथेना या रोमा देवी, कुबेर, इंद्र, ब्रह्मा, सूर्य, अपोलो आदि का चित्रांकन किया गया है, जो कि ग्रीक, रोमन और भारतीय परंपराओं से संबंधित हैं। गांधार कला के केंद्र में स्थित कपिशा में विदेशी कला के प्रभाव को दर्शाने वाले ऐसे कई पात्र या बर्तनों के अवशेष मिले हैं, जिन पर यूनानी चित्रकला के दृश्य अंकित हैं। इनमें प्रमुख हैं अकिले और हेरा के बीच युद्ध का दृश्य, ज़ीउस के बाज द्वारा गेनीमीड का अपहरण करने का दृश्य इत्यादि।

इस कला शैली में गौतम बुद्ध की उपस्थिति को गज, वृषभ, अश्व, बोधिवृक्ष और स्तूप आदि प्रतीकों के रूप में चिन्हित किया गया है। धीरे-धीरे मथुरा कला शैली की तरह गांधार कला शैली में भी बुद्ध की मानव मूर्तियों के निर्माण की परम्परा अस्तित्व में आ गई। गांधार कला शैली की स्थानक मुद्रा में प्रतिमाएं और मूर्तियाँ अति उत्कृष्ट कोटि की निर्मित की गई हैं। गांधार कला में मानव रूप में बुद्ध की आरंभिक शिल्प-मूर्ति पेशावर के समीप साहजी की ढेरी नामक स्थान से प्राप्त कनिष्क की अस्थिमंजूशा पर निर्मित है। सर्वप्रथम इसे स्पूनर महोदय के द्वारा प्रकाश में लाया गया था। इसके अतिरिक्त सहरी बहलोल, तुज्ते ए बहाई आदि स्थानों से मिली मूर्तियाँ अधिक भारी भरकम शरीर वाली हैं।

3.गांधार कला शैली की तिथि:-

गांधार कला शैली के तिथिक्रम के बारे में इतिहासकारों के मध्य विभेद है। गांधार कला की केवल चार मूर्तियाँ ऐसी हैं, जिन पर तिथियों का अंकन है, ये मूर्तियां हैं-हल्टनगर की मूर्ति, लौरिया तंगई की मूर्ति और सहरी बहलोल की मूर्ति। कनिंघम ने इस कला शैली पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि कनिष्क और उसके उत्तराधिकारियों का शासनकाल गांधार कला के लिए स्वर्ण युग था। फर्ग्यूसन महोदय ने भी गांधार कला का चरम काल लगभग 400 ई. माना है। स्मिथ महोदय ने इस कला का विकास काल 50 ई. से 150 ई. अथवा 200 ई. तक निर्धारित किया है। ग्रुनवेडेल और फूचे जैसे विद्वान इस कला शैली की शुरुआत पहली शताब्दी ईसा पूर्व से मानते हैं। वेन्जालिन रौलेण्ड ने यह स्पष्ट किया है, यह कला प्रथम सदी के अन्तिम चरण में प्रकाश में आयी और चौथी सदी तक प्रचलन में रही। गांधार कला शैली के विकास क्रम में यह कला प्रथम शताब्दी ई० पूर्व से दूसरी शताब्दी तक भावशून्य अवस्था में थी और तीसरी से चौथी शताब्दी तक इस काल की मूर्तियों में भावुकता, ओज आदि गुण दृष्टिगत होने लगे थे।

4.विषेशताएं:-

- इस कला शैली में निर्मित बुद्ध की मूर्तियों में निम्न विषेशताएं दिखालाई देती हैं
- गांधार कला केवल बौद्ध धर्म तक ही सीमित थी, इस शैली के नायक महात्मा बुद्ध हैं।
- गांधार कला शैली में बुद्ध की मूर्तियों में यूनानी कला के प्रभाव के कारण शरीर रचना विज्ञान पर विषेश ध्यान दिया गया है।
- बुद्ध का मुखमण्डल यूनानी देवता अपोलो की भाँति अण्डाकार प्रदर्शित किया गया है।
- यूनानी कला में अपोलो या एकोडाइट की मूर्तियों में सिर पर जूड़े का प्रदर्शन किया जाता था, जो एक उभार के रूप में होता था, गांधार कला शैली में बुद्ध के सिर पर यह उभार निर्मित किया गया है।
- गांधार कला शैली में बुद्ध की मूर्तियों को वस्त्रों की सलवटों की गहरी लकीरों से प्रदर्शित किया गया है, जो निश्चित ही प्रथम शताब्दी ई° की रोमन कला के प्रभाव को इंगित करता है।
- गांधार कला शैली में सौन्दर्य के बोध के साथ-साथ आध्यात्मिक बोध को भी सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है।
- गांधार कला शैली में कुछ मूर्तियों के वस्त्रों को हल्का भारी और मोटा प्रदर्शित किया गया है। मूर्तियों के कन्धे अधोवस्त्र से ढके हुए हैं। कुषाण परम्परा के प्रभाव के कारण कुछ मूर्तियों के चेहरे पर मूछों को भी प्रदर्शित किया गया है।
- इस शैली में बनी मूर्तियों मे अधिकांशतः भूरे रंग के पाषाण का प्रयोग किया गया है तथा कुछ मूर्तियां स्लेटी रंग के पाषाण की भी बनी हैं।
- गांधार कला शैली के अन्तर्गत निर्मित मूर्तियों में आभूषणों का प्रयोग प्रचुरता से किया गया है। बोधिसत्वों की मूर्तियों में अलंकरणों की इतनी अधिक प्रचुरता है कि वे एक भिक्षु न दिखकर एक यूनानी शासक प्रतीत होते हैं।
- गांधार कला शैली में बोधिसत्वों की प्रतिमाओं को खड़ी अवस्था में दर्शाया गया है और बुद्ध को पद्मासन मुद्रा में प्रस्तुत किया गया है।
- गांधार कला शैली का प्रभाव अजंता और अमरावती की चित्रकला में भी देखा जा सकता है। गांधार कला शैली में निर्मित की गयी बुद्ध मूर्तियों को टोंगा की तरह का एक वस्त्र धारण किये हुये दिखाया गया है। टोंगा एक बड़ी चादर होती थी, जिससे सारा शरीर ढ़क जाता था।
- गांधार कला शैली में निर्मित बोधिसत्वों की मूर्तियों में हाथ में कमल लिये हुये अवलोकितेश्वर, प्रज्ञापारमिता पुस्तक लिये हुये, मंजुश्री अमृत घट लिये हुए, और मैत्रेय को आभूषणों से अलंकृत प्रदर्शित किया गया है। मूर्तियों में अधोवस्त्र, धोती, चुन्नट आदि उभरती रेखाओं से दिखायी गयी हैं। अनेक मूर्तियों में दाढी और मूँछ, लम्बे केश ओर पगड़ी को भी प्रदर्शित किया गया है। गांधार कला के नमूने कश्मीर संग्रहालय, राँची संग्रहालय इत्यादि स्थानों पर मौजूद हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि गांधार कला शैली का विकास मथुरा कला शैली के पश्चात हुआ और इस कला को सर्वाधिक संरक्षण भारत के कुषाण शासकों द्वारा प्रदान किया गया था। गांधार कला में यूनानी ओर रोमन कला शैली की भांति अनेक प्रतीकों और अलंकरणों जैसी विषेशताओं का प्रयोग किया गया है, लेकिन इसकी आत्मा और इसकी विषयवस्तु भारतीय है। गांधार कला की कृतियों के बारे में विचार करते हुए वभिन्न विद्वानों ने इस कला को प्रथम प्रथम शताब्दी से पांचवी शताब्दी तक अस्तित्व में रहने की बात को स्वीकार है।

सन्दर्भ-ग्रंथ सूची:

- छान्दोग्य उपनिषद, 6/4/12।
- डा॰ बृजभूषण श्रीवास्तव, प्राचीन प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, पृष्ठ संख्या 339
- जॉन मार्शल, दि बुद्धिस्ट आर्ट आफ गांधार, पृष्ठ संख्या 990
- वी॰ ए॰ स्मिथ, ए हिस्टी आफ दि फाइन आर्ट इन दि इण्डिया एण्ड सेलोन, पृष्ठ संख्या 53
- वी॰ डी॰ महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ संख्या 428
- डाँ॰ पृथ्वीकुमार अग्रवाल, प्रचीन भारतीय कला एवं वास्तुकला, पृष्ठ संख्या 343
- वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, पृष्ठ संख्या 285
- अरविन्द कुमार सिंह, प्राचीन भारत की मूर्तिकला और चित्रकला, पृष्ठ संख्या 54
- डाँ॰ बृजभूषण श्रीवास्तव, भारतीय कला, पृष्ठ संख्या 324
- डा॰ संध्या पाण्डेय, गुप्तकालीन बौद्ध चित्रकला, पृष्ठ संख्या 130